International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(2): 77-79

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(2): 77-79
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-01-2021
Accepted: 19-02-2021

कंचन कुमारी
शोध छात्रा एम० फिल०
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू, भारत

Corresponding Author:
कंचन कुमारी
शोध छात्रा एम० फिल०
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू, भारत

प्रमुख नाट्य साहित्य में उपलब्ध प्रतिनायक के चरित्र का मूल्यांकन

कंचन कुमारी

प्रस्तावना

संस्कृत काव्यमर्मज्ञों ने काव्य के दो भेद किए हैं, दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य। श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत गद्य, पद्य एवं चम्पूकाव्य आते हैं एवं दृश्यकाव्य के अन्तर्गत रूपक। रूपकों की संख्या 10 है। [1] नाटक, सप्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अंक और ईहामृग।

नाटक रूपकों के इस प्रकारों में से एक प्रकार है, भेदमात्र है या हम इसे रूपक का प्रमुख भेद भी मान सकते हैं। जिसे अंग्रेजी में क्तंउं शब्द से सम्बोधित किया गया है। दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने कहा है कि "अवस्थानुकृतिनटिसम्" [2] अर्थात् अवस्था का अनुकरण ही नाटय कहलाता है। भारतीय परम्परा के अनुसार जैसा की नाट्यशास्त्रकार भारतमुनि ने बताया है कि नाट्य साहित्य (नाटक) की उतपत्ति त्रेतायुग में ब्रह्मा जी के द्वारा हुई है। उनके अनुसार त्रेतायुग में देवता लोग ब्रह्मा जी के समीप गये और उनसे प्रार्थना की कि वे ऐसे वेद की रचना करें जो हम सब आँखों से देख सके और कानों से सुन सकें। जिसके द्वारा वेद श्रवण के अन्याधिकारी शूद्रजन एवं स्त्रीजन भी अपना मनोरंजन कर सकें। इस पर ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से संवाद, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत और अथर्ववेद से रस के तत्वों को लेकर पञ्चमवेद नाट्यशास्त्र की रचना की। यथा ...

> "जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात् सामभ्योगीतिमेव च।
> यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथवर्णादपि।।" [3]

संस्कृत नाट्यसाहित्य में नायक एवं प्रतिनायक की मुख्य भूमिका रहती है। नाटक का प्रधान तत्व यदि नायक है तो हमें यह भी मानकर चलना चाहिए कि प्रतिनायक (खलनायक) के बिना नाटक पूर्णरूप से सफल नहीं होगा। अतः प्रतिनायक का भी नाट्य साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ का कहना है कि नाटक वह है जो त्याग भावना से भरा हो, महान कार्यों को करने वाला हो। महान कुलोत्पन्न हो, बुद्धि वैभव सम्पन्न हो, रूप यौवन एवं उत्साह की भावना से सम्पन्न हो। तेजस्वी, सुशील और जनता का स्नेहभाजन हो। [4] साहित्यदर्पण एवं नाट्यशास्त्रकार ने प्रकृति के आधार पर नायक के चार भेद किय हैं। यथा–

> "धीरोधातो धीरोद्धतस्तथाधीरललितश्च।
> धीरप्रशान्त इत्यमुक्तः प्रथमश्चतुर्भेदः।।" [5]

ये चारों प्रकार के नायक धीर तो होते ही हैं धीरत्व के अतिरिक्त इनमें अपनी–2 प्रकृतिगत विशेषताएं पाई जाती है। नायक का प्रकार 'ललित' या धीरललित हैं 'शान्त' या धीरशान्त, 'उदात्त' या धीरोदात्त और 'उद्वात' या धीरोद्वात है। इनके उदाहरण क्रमशः वत्सराज उदयन, चारूदत, राम और भीमसेन दिए जा सकते हैं।

संस्कृत नाट्यसाहित्य (नाटकों) में प्रतिनायक के चरित्र से तात्पर्य उन–2 रूपकप्रबन्धों से हैं जहाँ नाटक की फल प्राप्ति के मार्ग में आने वाले बाधक तत्वों को मूर्त रूप देकर प्रतिनायक के चरित्र को उभारना है। प्रतिनायक तो द्वन्द्व, संघर्ष और फलप्राप्ति में बाधक उन तत्वों के सामूहिक संज्ञा के पर्याय हैं जो नायक के चरित्र को गतिमान करने के साथ ही सामाजिक को परमानन्द की अनुभूति का अवसर प्रदान करते हैं जैसे कोई पहाड़ नदी की मार्ग में आने वाली ऊँची नीची पर्वतशिलाओं, उसकी गति को प्रखरता एवं गतिमत्ता प्रदान करते हैं, उसी प्रकार नायक के चरित्र को उभारने और अग्नि में तपे हुए सुवर्ण की भान्ति कान्ति फैलाना प्रतिनायक का कार्य है। [6] प्रमुख नाट्यसाहित्य में उपलब्ध नाटकों (रूपकों) में प्रतिनायक भूमिका के प्रयोग पक्ष को, उसकी व्यवहारिक उपयोगिता को मूल्यांकन करने के लिए मैंने अपने इस शोध पत्र में रामकथा, महाभारत कथा एवं ऐतिहासिक लोककथाश्रित नाटकों (रूपकों) को आधार बनाकर मूल्यांकन किया है।

रामकथाश्रित रूपकों में प्रतिनायक का चरित्र– महाकवि भास वे पहले नाटककार हैं जिनके रूपकों को संस्कृत नाट्यसाहित्य में सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। रामकथाश्रित रूपकों में भास ने संस्कृत नाट्यसाहित्य को प्रतिमा और अभिषेक जैसी दो बहुमूल्य रचनाएँ दी हैं।

प्रतिमा–नाटक का पाँचवा अंक ही एकमात्र ऐसा अंक हैं जिसमें हमें प्रतिनायक (रावण) के दर्शन होते हैं। जिसमें सीताहरण के अवसर पर रावण की आत्मश्लाघा [7] एवं श्रीराम की उत्तेजना, कथानक का निर्वाह मात्र हैं। [8] इस अंक में हमें रावण की विद्वता एवं माया का परिचय भी देखने को मिलता है। वह सीता हरण का जो कुकर्म कर रहा है उसे भी इस अंक में स्पष्ट कर देता है। [9] वह चोरों की भांति सीता का हरण नहीं करता अपितु घोषणा करता है कि' जनस्थान के निवासियों!

सुनों, मैं सीता को अपहरण करके ले जा रहा हूँ यदि राम में क्षात्रतेज है तो अपने पराक्रम का परिचय दें। [10] वह कहता है कि खर और दूषण जैसे बन्धु शूर्पणखा को कुरूपा बनाकर राम ने उसके मन में प्रतिशोध की भावना को उत्पन्न किया है। [11] इस रूप में रावण (प्रतिनायक) धीरोद्धत भी है और पापकृत तथा व्यसनी भी। प्रतिमा की भांति अभिषेक नाटक में भी रावण ही प्रतिनायक के रूप में और उप–प्रतिनायक के रूप में बालि के दर्शन होते हैं। नाटक का कथानक बालिवध से आरम्भ होकर राम–रावण युद्ध एवं श्रीराम और विभिषण के राज्याभिषेक की कथा से समाप्त होता है। इस नाटक में प्रतिनायक (रावण) अहंकार का जीवित आदर्श है। उसका क्रोधी और उग्र स्वभाव तथा माया एवं छलकपट सब स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। सीता पर प्रतिनायक की आसक्ति भी है और दया भी वह कहता है कि राम नर हो या नारायण पर रावण की दृष्टि में तो वे निरीह तापस [12] ही है, साधारण मानुष [13] ही है, एक निरीह मृग [14] है और नराधम है। [15] इस प्रकार रावण (प्रतिनायक) द्वारा राम के प्रति व्यक्त इन शब्दों में राम को अपना शत्रु मानने की भावना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि भास ने यहाँ अभिषेक नाटक में प्रतिनायक (रावण) के चरित्र को महत्वपूर्ण ढंग से उठाया है।

तदुपरान्त महाकवि भवभूति रचित महावीर चरित में हमें कतिपय प्रतिनायकों की एवं प्रतिनायिका की झलक देखने को मिलती है। जिनमें जामदग्नि (परशुराम) रावण, माल्यवान, बालि और शूर्पणखा का नाम आता है। परशुराम क्रोध की साक्षात् मूर्ति हैं। राम के प्रतिनायक में आने वाले, 21 बार क्षत्रियों का विनाश करने वाले, परशुराम का मूल्याङ्कन करते हुए वसिष्ठ ऋषि कहते हैं कि–गुणों से महान होते हुए भी वह स्वभाव से असुर है। [16] उनके क्रोध के मूल में जो जातिगत घृणा है वह उनका कलङ्क हैं। [17] क्षत्रिय हन्ता कहलाने में उन्हें गर्व का अनुभव होता है। [18] तत्पश्चात प्रतिनायक रावण की झलक छठे अंक में दिखती है। उस समय वह सीता के रूप पर मोहित है। महावीर चरित में रावण का चरित्र एक हारे हुए सेनापति के सदृश है। उसके चरित्र में न तो उत्साह है ओर न ही औद्धत्य का विकास। ऐसा लगता है कि भवभूति के महावीरचरित में माल्यवान् ही मुख्य प्रतिनायक हैं जो रावण के लिए हर प्रकार के कार्य करता है। परशुराम को राम के विरूद्ध उत्तेजित करके वह कई लाभ उठाना चाहता है। राम का संहार [19], राम परशुराम का विनाश [20] यह माल्यवान की कूटनीति थी।

नाटक में बालि की वीरता का परिचय पग–पग पर मिलता है। राम स्वयं बालि को मन ही मन महावीर स्वीकार करते हैं। [21] नाटक में राम बालि का संक्षिप्त परिचय ही मिलता है। इन प्रतिनायकों के अतिरिक्त महावीरचरित में शूर्पणखा ही एक ऐसी प्रतिनायिका है तो माल्यवान की सारी योजनाओं से परिचित है, वह जानती हैं कि माल्यवान से अधिक सशक्त कूटनीतिज्ञ रावण के पक्ष में कोई नहीं है और माल्यवान के शस्त्र डाल देने पर तो रावण को कोई बचा नहीं सकता।

जयदेव द्वारा रचित प्रसन्नराघव नामक नाटक में हमें प्रतिनायकों की दृष्टि से वाणासुर एवं रावण के दर्शन होते हैं। जिसमें रावण तो राम के प्रतिनायक होने से अप्रत्यक्ष ही सही किन्तु वाणासुर प्रतिनायक के रूप में नाटक कल्पना मात्र ही उभरे हैं। रावण के साथ युद्ध करते हुए राम, सर्वदा प्रसन्न दिखते हैं। क्षणमात्र क्रूद्ध होते ही रावण घूलघूसरित हो जाते हैं। [22] ऐसी तुलना कि है प्रति नायक रावण की। कवि की दृष्टि से प्रतिनायक रावण का राम के साथ युद्ध तो क्रीडामात्र है, लीला है।[23] इस नाटक में प्रतिनायक के रूप में रावण के अतिरिक्त बालि, मारिच, बाणासुर और जमदग्नि सभी की योजना है किन्तु उनमें से अधिकांश नेपध्य से बाहर ही नहीं लाए गए।

महाभारत कथाश्रित रूपकों में प्रतिनायक का चरित्र–

महाकवि भास द्वारा रचित नाटक बालचरित में श्रीकृष्ण की बाललिलाओं का वर्णन देखने को मिलता हैं। प्रतिनायकों में अरिष्टर्षभ प्रभूति दैत्यों [24] के अतिरिक्त कालिया [25] सांप और कंस [26] का नाम आता है। अरिष्टर्षभ एवं कालिया के औद्धत्य में प्राण नहीं है। विशेषकर यह जानकर कि वे मानवेतर प्राणी है। उनके प्रति अधिक उत्साह का अवकाश भी नहीं हैं। प्रतिनायक कंस भी अधिक सशक्त नहीं है, फिर भी उनकी भूमिका अन्य प्रतिनायकों, अपितु किसी सीमा तक नायक कृष्ण से भी अधिक प्रभाव छोड़ती है। तत्पश्चात् पञ्चरात्र नामक नाटक का प्रतिनायक दुर्योधन है। "हतो वा प्राप्स्पसि स्वर्गम" [27] में वह विश्वास नहीं करता उसका कथन है कि मनुष्य के शुभ–अशुभ कर्मों का फल इसी जन्म में मिल जाता है। [28] इसके विपरीत द्रोणाचार्य एक आदर्श प्रतिनायक है। जो दुर्योधन की भक्ति से अभिभूत है। [29] साथ ही साथ कुटिल शकुनि का प्रतिनायक चरित्र नायक एवं प्रतिनायक दोनों के ही चरित्र निर्माण में सहायक दिखता है।

ऐतिहासिक लोककथाश्रित नाटकों (रूपकों) में शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् एवं विशाखादत्तकृत मुद्राराक्षस, की गणना सरलता से की जा सकती है। जिनमें नायक–विरोधी भूमिकाओं की देखा जा सकता है।

मृच्छकटिक का प्रतिनायक शकार और उन प्रतिनायक शर्विलक है जो एक और तो शकार का सहायक बनता है और दूसरी ओर चारूदत्त के कष्टों का कारण बनता है। मृच्छकटिक का प्रतिनायक शकर मुख्य नायक चारूदत्त से सीधे संर्घष में उतरता है। प्रथम अंक में प्रतिद्वन्द्विता की प्रत्यक्ष घोषणा [30] करने के बाद शकार के दर्शन अष्टम, नवम एवं दशम अंक में होते हैं। शूद्रक ने प्रतिनायक के माध्यम से कथापक को इतना प्रभावित किया है जिससे नायक और नायिका का चरित्र उभर कर दर्शकों के प्रत्यक्ष आता दिखता है। तत्पश्चात राजनीतिक नाटकों की परम्परा में मुद्राराक्षस का स्थान सर्वोपरि है। इस नाटक का नायक चाणक्य है पर क्रूर है और राक्षस प्रतिनायक होते हुए भी क्रूर नहीं है। राक्षस भावुक है, वह संवेदनशील है, चाणक्य की तरह कठोर नहीं। अनेक सेवकों के प्रति भी वह अत्यन्त उदार है। [31] नन्दवंश के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, भक्ति है, प्रेम है। अपने इसी चरित्र में राक्षस प्रतिनायक होते हुए भी मुद्राराक्षस के पाठकों का मनमोह लेता है। दूसरी और चंद्रगुप्त के स्थान पर मलयकेतु को राजा बनाने की राक्षस की अभिलाषा से हम मलयकेतु को भी उपप्रतिनायक मान सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नाट्य साहित्य में रामायण कथाश्रित रूपकों में चाहे वह राचण, बालि, परशुराम, माल्यवान, शूर्पणखा, वाणासुर ही महाभारत कथाश्रित नाटकों मे चाहे, वह कंस, दुर्योधन, कालिया सांप, द्रोणाचार्य, शकूनि हो एवं लोककथाश्रित रूपको में चाहे वह शकार, शर्विलक, राक्षस या मलयकेतु हो सभी प्रतिनायकों ने अपने–अपने चरित्र को बहुत ही अच्छी तरह से निभाया है अतः हम कह सकते हैं कि प्रतिनायक के चरित्र को दिखाना भी उतनी ही बड़ी कला है जितनी बड़ी कला किसी नायक के चरित्र को प्रस्तुत करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नाटकं सप्रकरणं भाण प्रहसनम् डिमः।
   व्यायोग समवकार वीथीडक ईहामृगाः इति।। दशरूपक प्रथम प्रकाशः (1/8)
2. दशरूपक प्रथम प्रकाशः पृ० 6
3. नाट्यशास्त्र– पृ०15
4. "त्यागी कृती कुलीन सुश्रीको रूप यौवनोत्साही।
   दक्षोनुरक्तलोकतेजोवैयग्ध्यशीलवान्नेता।।" सा० दर्पण– पृ० 110
5. साहित्य दर्पण– पृ० 27
6. भारतीय नाट्य साहित्य– सेठ गोविन्ददास अभिनन्दन ग्रन्थ में डॉ० सतयव्रत सिंह के विचार
7. प्रतिमानाटक– 5/17, 18
8. प्रतिमानाटक– 5/21
9. प्रतिमानाटक– 5/16
10. बलदेव दशगीवः सीतामादाय गच्छति।
    क्षात्रधर्मे यदि स्निग्धः कुर्याय् रामः पराक्रम्। प्रतिमानाटक– 5/21
11. प्रतिमा० 5/16
12. अभिषेकनाटक 2/10
13. अभिषेकनाटक 2/12, 14
14. अभिषेकनाटक 2/13
15. अभिषेकनाटक 2/10
16. महावीरचरित 3/12
17. सद्वृत एषः। तथापि क्षत्रिय इति शिरः शूलमुव्कोपयति। महावीरचरित 2/पृ० 17
18. महावीरचरित 2/17, 41
19. महावीरचरित 2/पृ० 37
20. महावीरचरित 2/12
21. रामः (स्वगतम्)महावीर सः महावीरचरित 5/227
22. अयमदमसौ रौषरूढे क्षणं रधुनन्दने।
    भुति दशमुखः शेले धूलिच्छटापरिघूरः।। प्रसन्नराघव/7/52
23. विद्याधरः क्रीडति खलु रामः सह राचणेन। प्रसन्न–पृ० 112
24. बालचरित 3/2
25. बालचरित चतुर्थ अंक
26. बालचरित पञ्चम अंक
27. गीता 2/37
28. यदि विमृशासि पूर्वाजिघ्नातां में..... पञ्चरात्र – 1/30
29. द्रोणः पुज दुर्योधन। अहं तव प्रभावी ननु। पञ्चरात्र, पृ० 383
30. शकारः भाव–भाव। एषा गर्भदासी कामदेवायतनोद्यानाव्रभाति तस्य चारूदत्तस्या नुरक्ता न मां कामयते। मृच्छकटिक पृ० 26–27
31. क) मुद्राराक्षस प्र० अंक, पृ० 22
    ख) मुद्राराक्षस द्वि० अंक, पृ० 87